जब-जब संसार में दैवी सत्प्रवृत्तियों का ह्रास हुआ, जनमानस में आसुरी प्रवृत्तियों का बाहुल्य हुआ, तब-तब किसी महान् आत्मा का प्रादुर्भाव हुआ है। उन महान् आत्माओं ने मानव मात्र को आसुरी प्रवृत्तियों से मुक्त करा उसे मुक्ति का मार्ग दिखाया। इसी श्रृंखला में राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, एकनाथ, कबीर आदि संतों का प्रादुर्भाव हुआ है। जिन्होंने मानव मात्र की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। वर्तमान में परमपूज्य स्वामी श्री परमहंस परमानन्द जी भी इसी श्रेणी के सिद्ध पुरुष थे।

श्री परमहंस अड़गड़ानन्द जी, योगीराज, युगपितामह परमपूज्य स्वामी श्री परमानन्द परमहंस जी के शिष्य हैं। स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी जाति, धर्म, देश-काल की सीमाओं से परे काम-क्रोध, मोह-माया पर विजय प्राप्त कर चुके, सामाजिक व पारंपरिक आडंबरों से मुक्त, परमब्रह्म में सदा लीन, त्रिकालदर्शी, दिव्यात्मा ज्ञान के प्रकाश-पुंज एक सिद्धपुरुष हैं।

स्वामी जी के आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत अनुसुइया आश्रम में स्वामी श्री परमहंस परमानन्दजी के सान्निध्य में हुई। साधना की प्राप्ति के पश्चात् इष्ट के आदेशों के अनुसार स्वामी जी ने मानव मात्र की मुक्ति का मार्ग लोगों को समझाना शुरू किया। स्वामीजी ने समाज को रूढ़िगत आडम्बरों से मुक्त करने के लिए ''शंका समाधान'' नामक पुस्तक का प्रणयन किया। इस पुस्तक में स्वामी जी ने समाज में व्याप्त भ्रामक प्रश्नों को सही रूप दिया है। आडम्बरों और रूढ़ियों का शमन करते हुए संतों व मुनियों की वाणी तथा गीता, रामायण एवं पुराण में दिये गये वक्तव्यों का उदाहरण देकर किया है।

यों तो गीता पर हजारों विद्वानों ने टीकाएँ लिखी हैं, किन्तु कोई भी योगेश्वर श्रीकृष्ण के आशय को सही रूप में नहीं समझा सका; क्योंकि योगेश्वर श्रीकृष्ण के आशय को समझने और समझाने के लिए उन्हीं की श्रेणी तक पहुँचना पड़ेगा। अनवरत ध्यान व परमब्रह्म में लीन पुरुष ही वहाँ तक पहुँच सकता है। स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी आज उन्हीं सद्गुरु का कृपा-प्रसाद सिद्धपुरुष हैं। स्वामी जी ने ''यथार्थगीता'' में श्रीकृष्ण की वाणी का आशय भली प्रकार समझाया है।

''जीवनादर्श एवं आत्मानुभूति'' पुस्तक में स्वामीजी ने अपने पूज्य गुरु श्री परमानन्द जी के जीवन के वृत्तांत, उनकी अनुभूतियों एवं उपदेशों को संकलित किया है।

''अंग क्यों फड़कते हैं और क्या कहते हैं?'' इस पुस्तक में मानव शरीर के विभिन्न हिस्सों में होने वाले स्पंदनों का कारण व उनके संकेतों का आध्यात्मिक रूप से विश्लेषण किया गया है। स्वामीजी द्वारा संकलित सभी पुस्तकें हृदयंगम करने योग्य हैं। निश्चय ही इन पुस्तकों का अध्ययन करके मानव अपना मुक्ति-पथ जान सकता है और उस पर चल भी सकता है।